भूमिका

लोकगीत किसी एक व्यक्ति द्वारा रचित नहीं होते बल्कि पूरे समाज द्वारा रचे जाते हैं। विशेष रूप से आदिवासियों के जीवन में लोकगीतों का बहुत महत्व है। इनके अलग-अलग त्यौहारों व शादी जैसे अवसरों के लिए तो विशेष लोकगीत होते हैं। आदिवासी समाज के लोकगीतों में हमें प्रकृति, संस्कृति, रीतिरिवाज एवं उनके जीवन का यथार्थ दिखाई देता है।

मनुष्य अपने जीवन में सुखदुःख का जो अनुभव करता है, अपने परिवेश प्रकृति में जो कुछ देखता है, उससे सहज रूप से उत्पन्न भावों को वह अपनी वाणी तथा हाव-भाव से व्यक्त करता है। साधारण जन अपने मस्तिष्क और हृदय पर प्रभाव डालने वाली घटना के बारे में गाकर, नाचकर या रोकर रागात्मक भावनाओं की भाषागत अभिव्यक्ति ही लोक साहित्य करता है।

'लोक' शब्द संस्कृत के 'लोकदर्शने' धातु में 'घञ' प्रत्यय लगाकर बना है, जिसका अर्थ- देखने वाला। साधारण जनता के अर्थ में इस शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में अनेक स्थानों पर हुआ है। 'लोक और गीत' के मेल से लोक गीत का निर्माण हुआ है। लोक का अर्थ है, जनता, सर्वसाधारण, जन-जन, लोक-प्राणी, जन-समूह, लोग मानव जाति। गीत का अर्थ है, गाना अर्थात् वह रचना जो गेय हो, तदनुसार लोकगीत कहते ही हमारा ध्यान लोक उन गीतों की ओर सहसा जाता है, जो लोक जीवन में प्रतिदिन उषाकाल से मध्य रात्रि तक किसी क्रिया से निर्विवाद रूप से जुड़े होकर मनुष्य को स्फूर्ति प्रदान करते हैं। इसलिए लोकगीतों को 'स्वत: स्फूर्त गीत' कहा गया है।

आदि मानव के मुख से सर्वप्रथम कुछ लयात्मक बोल फूटे होंगे। बोलों के शब्दों से उसे आनंद की अनुभूति होगी। इन्हीं बोलों, शब्दों और लयों से गीतों की यात्रा प्रारंभ हुई होगी। एक अन्य अनुमान के अनुसार आदिम मनुष्य जो भाषा विहीन था, जब सर्वप्रथम किसी दुःख का अनुभव कर रोया होगा या सुख के अनुभव में हंसा होगा, तो उसी स्वर की अनुभूति बन गई लोकगीत। इन तथ्यों

से स्पष्ट होता है कि लोक गीतों की उत्पत्ति संघर्षशील मानव की साहसिक एवं आदिकालीन जीवन यात्रा है।

पश्चिम मध्यप्रदेश के झाबुआ, आलीराजपुर, धार, बड़वानी, खरगोन आदि ज़िलों में मुख्यतः भील, भीलाला, बारेला और नाइक आदिवासी रहते हैं। ऐसा माना जाता है कि भीलाला और बारेला मूलतः भीलों से ही निकली हुई उपजातियां हैं। इनका मुख्य रोज़गार का साधन कृषि, पशुपालन, वनोपज संग्रह, साथ में मज़दूरी करना है। ऐतिहासिक रूप से ये लोग वन क्षेत्रों में रहे हैं। लेकिन वर्तमान में अधिकतर लोग गाँवों में ही निवास करते हैं। इनकी भाषा भीली, भीलाली एवं बारेली के नाम से जानी जाती है। पश्चिम मध्यप्रदेश के इन जिलों के लगभग सभी आदिवासी इन्ही भाषाओं का प्रयोग करते हैं। भीलाली और बारेली भी एक दूसरे के बहुत निकट हैं और प्रायः सभी लोग एक दूसरे की बात समझ सकते हैं। अलीराजपुर जिले के कुछ भील आदिवासियों की भाषा एकदम अलग है।

इस क्षेत्र के आदिवासियों का एक लम्बा संघर्ष का इतिहास रहा है। 1857 में भीमा व खाजिया नाइक का अंग्रेजों के साथ संघर्ष किया वहीं निमाड़ क्षेत्र में टंटिया भील जिसने आदिवासियों की ज़मीन छीनने वाले जागीरदारों से संघर्ष किया। बीसवीं सदी की शुरूआत में उत्तर झाबुआ के भीलों ने गोविंद गुरू के साथ मिल कर अंग्रेजों से लोहा लिया। बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में पश्चिम भारत की यह भील पट्टी मामा बालेश्वर दयाल के लाल टोपी आंदोलन में जुड़ी और राजाओं की ज़्यादतियों, शराब बंदी, वनों पर अधिकार अंग्रेजों, के कर्मचारियों के खिलाफ आंदोलन छेड़ा। 1980 के बाद से इस क्षेत्र में बहुत से जन संगठनों ने भी आदिवासियों को संगठित किया और उनके साथ होने वाले अन्याय के विरूद्ध संघर्ष किया। आज भी इनके द्वारा अपने अधिकारों की मांगो के लिए लड़ाई जरी है। इन संघर्षों को भी आदिवासियों ने अपने गीतों में उतारा है। इन लोकगीतों के द्वारा लोगों की चेतना में विकास हुआ है।

मेरे लघु-शोध प्रबंध कार्य में मैंने मध्यप्रदेश के बड़वानी जिले के देवली, सोलवन, साकड़, खुरमाबाद एवं शिवन्या गाँव का भ्रमण किया। इस भ्रमण के दौरान मैंने 72 आदिवासी लोक

गायक/गायिकाओं से बारेली बोली के लोकगीतों का संकलन किया। फिर मैंने इन लोकगीतों का हिंदी में अनुवाद किया व साथ में इन गीतों का आदिवासियों के जीवन में क्या महत्त्व है? इसके साथ ही 10 लोक गायक/गायिकाओं का साक्षात्कार भी लिया। इन सभी लोगों से मुझे बहुत सी महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त हुई। इस बात को कहने में मुझे कोई झिझक नहीं हो रही है कि आज तक इन आदिवासी लोक गायकों एवं गायिकाओं का किसी ने न कभी साक्षात्कार लिया न ही इनके गीतों का संकलन किया। इन सभी लोगों के पास भरपूर ज्ञान भरा है जो पूर्ण रूप से मौखिक ही है, जिसे आज लिखित कर बचाने की जरुरत है तभी इनकी आने वाली पीढ़ी अपनी संस्कृति, ज्ञान, अपनी अस्मिता को बचा सकती है। लोकगीतों के माध्यम से मुख्यधारा के लोग आदिवासी समाज की वास्तविकता को जान सकते है।

मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध कार्य को चार अध्यायों में विभाजित किया। जिनमें पहला अध्याय **'मध्यप्रदेश के आंचलिक लोकगीतों का परिचय एवं बड़वानी, झाबुआ व अलीराजपुर जिले के आदिवासी'** है। इस अध्याय में मैंने चार-उपध्याय बनाएं हैं। प्रथम उप-अध्याय में मध्यप्रदेश के आंचलिक लोकगीतों का परिचय है। दूसरे, तीसरे एवं चौथे उप-अध्याय में पश्चिम मध्यप्रदेश के भील, भिलाला एवं बारेला जनजाति का परिचय देते हुए उनकी आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक स्थिति का वर्णन किया है।

दूसरा अध्याय **'मध्यप्रदेश के भील, भिलाला और बारेला जनजाति के लोकगीत'** के नाम से है। इस अध्याय को पांच उप-अध्यायों में विभाजित किया। जो इस प्रकार से है- विवाह के लोकगीत, होली के लोकगीत, दीपावली लोकगीत, नवाय के लोकगीत एवं चेतना के लोकगीत। मैंने इन लोकगीतों का हिंदी में अनुवाद करते हुए इन लोकगीतों के महत्त्व को समझाने की कोशिश की है।

तीसरा अध्याय **'आदिवासी लोकगीतों की भूमिका'** के नाम से बनाया है। इस अध्याय को मैंने पांच उप-अध्यायों में विभाजित किया है। जिसमें मैंने आदिवासी लोकगीतों की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक व सांस्कृतिक भूमिका को दिखाने का प्रयास किया है।

चौथा अध्याय **'आदिवासी लोकगीतों की वर्तमान स्थिती' के नाम से बनाया है ।** इसके अंतर्गत वर्तमान में इन गीतों में हुए बदलावों व समस्याओं को दिखाया है।

मेरे लघु-शोध प्रबंध को पूरा करने में कई सारेविद्वानों का का मार्गदर्शन रहा। सर्वप्रथम मैं मेरे शोध निर्देशक डॉ.बीर पाल सिंह यादव का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे समय-समय पर मार्गदर्शन किया जिससे मैं अपना लघु शोध-प्रबंध पूरा कर सका।

मेरी माता बलायटीबाई डूडवे, पिता मुकेश डूडवे एवं भाई- बहनों का आभारी हूँ जिनके सहयोग से शिक्षा के इस पड़ाव तक मैं पहुंच पाया हूँ। मैं साकड़, देवली, सोलवन, खुटवाड़ी, खुरमाबाद एवं शिवन्या के सभी लोककगायक/गायिकाओं का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे अपना बहुमूल्य समय निकालकर लोकगीतों को सुनाया एवं कई सारी महत्वपूर्ण जानकारी दी।

हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो.सूरज पालीवाल का भी आभारी हूँ। मैं हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के प्रो.कृष्ण कुमार सिंह, डॉ.अशोक नाथ त्रिपाठी, डॉ. रामानुज अस्थाना, डॉ.प्रीति सागर, डॉ.उमेश कुमार सिंह, डॉ.सुनील कुमार'सुमन', एवं डॉ रूपेश कुमार सिंह, का भी आभारी हूँ जिन्होंने मुझे लघु शोध-प्रबंध कार्य को पूर्ण करने मेंसहयोग किया।

मैं मेरे अन्य गुरु अमित भटनागर एवं जयश्री भालेराव का भी आभारी हूँ जिन्होंने मुझे इस लघु-शोध प्रबंध को पूरा करने के लिए प्रेरित किया ।

मैं मेरे दोस्त प्रकाश वास्कले, दिनेश जाधव, बलसिंग सेमले, सुनील पटेल का आभारी जिन्होंने मुझे लोकगीतों के संकलन में महत्वपूर्ण सहयोग दिया।

मैं मेरे सहपाठी आशीष, सतपाल यादव, कांचन बोस, देविदास येळने, संतोष शिंदे, संतोष मंडल, प्रेम कुमार, कुमार विश्वमंगल, रमेश राज , नीरज राय, जुगल किशोर एवं देवेन्द्र सिंह का भी आभारी हूँ जिन्होंने मानसिक रूप से सहयोग किया जिनकी वजह से मैं अपना लघु शोध-प्रबंध को पूर्ण कर सका ।

अनुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

भूमिका **1- 4**

अध्याय -1: मध्यप्रदेश के आंचलिक लोकगीतों का परिचय एवं बड़वानी, झाबुआ व अलीराजपुर जिले के आदिवासी **7 - 13**

1.1- मध्यप्रदेश के आंचलिक लोकगीतों का परिचय

1.2- भील जनजाति

1.3- बारेला जनजाति

1.4- भिलाला जनजाति

अध्याय -2 : मध्यप्रदेश के भील, भिलाला और बारेला जनजाति के लोकगीत **14 -38**

2.1- विवाह के लोकगीत

2.2- होली के लोकगीत

2.3- दीपावली लोकगीत

2.4- नवाय के लोकगीत

2.5- चेतना के लोकगीत

अध्याय - 3 : आदिवासी लोकगीतों की भूमिका **39 - 42**

3.1- सामाजिक

3.2- सांस्कृतिक

3.3- धार्मिक

3.4- राजनीतिक

3.5- आर्थिक

अध्याय - 4 : आदिवासी लोकगीतों की वर्तमान स्थिति **43 - 45**

4.1- बदलाव

4.2- समस्याएं

उपसंहार **46 - 47**

परिशिष्ट

1. *लोकगायकों का साक्षात्कार* *48 - 56*

2. आदिवासी लोकगीत *57 - 73*

3. *लोक गायक/ गायिकाओं के नाम एवं छायाचित्र* ***74 - 82***

सन्दर्भ सूची

सहायक ग्रन्थ सूची

साक्षात्कार

पत्र-पत्रिकाएं

मध्यप्रदेश के आंचलिक लोकगीतों का परिचय एवं बड़वानी, झाबुआ व अलीराजपुर जिले के आदिवासी

मध्यप्रदेश लोकगीतों का आंचलिक परिचय

मध्यप्रदेश न केवल देश का विशाल राज्य है, वरन एक प्रमुख अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति बहुल प्रदेश भी है। यहाँ के समस्त भोगोलिक विस्तार में चार प्रमुख सांस्कृतिक अंचलों बुंदेलखंड, मालवा, निमाड़ एवं बघेलखंड में फैलाव है। यह प्रदेश मिश्रित संस्कृति का अनूठा आदर्श है, यहाँ के लोकगीतों पर इसका प्रभाव पड़ा है।

मध्यप्रदेश के अंचलों में समय और साधन के अनुरूप विभिन्न ऋतुओं, तीज-त्यौंहारों, उत्सवों एवं सांस्कृतिक अनुष्ठानों आदि में लोकगीतों का प्रचलन है। मध्यप्रदेश के विभिन्न अंचलों में लोक बोली या लोकभाषा की अपनी अलग पहचान है। कहा गया है कि पाँच कोस में बोली बदले, दस कोस में पानी। मध्यप्रदेश की प्रमुख बोलियाँ हैं- बुन्देली, बघेली, मालवी एवं निमाड़ी। इनके अतिरिक्त गोंडी, भीली, कोरकू, भिलाली, बारेली आदि भी बड़े क्षेत्र में बोली जाने वाली बोलियां हैं। लोकगीतों का सही रूप हमें गांवों में दिखाई पड़ता है। बुन्देलखंड हो बघेलखंड या निमाड़ हो मालवा सभी अंचलों के लोकगीतों में पीपल, बरगद, नीम की छाँव, पनघट की छलछलाहट, पनिहारिनों की मटक, चक्की की घरर-घरर, चूड़ियों की खनक, सूपे की फटक, झाड़ू की झर्र तथा बैलों की घंटी की सच्ची पहचान व्याप्त है।

मध्यप्रदेश के आदिवासियों के लोकगीतों का विशेष महत्व होता है। इनकी संस्कृति में लोकगीत घुले हुए है जिससे समाज के छोटे बच्चों से लेकर बुजर्गों तक इन लोकगीत को गाते हैं।

भील जनजाति

'भील' शब्द की उत्पत्ति द्रविड़ भाषा के 'बील' शब्द से मानी जाती है। जिसका अर्थ 'कमान' होता है। तीर-कमान रखना इस जाति का आदिकाल से वर्तमान तक का प्रमुख लक्षण रहा है।

मध्यप्रदेश में कई जनजातियाँ हैं, जिनका अपना पृथक अस्तित्व एवं महत्व है। भीलों का अपना एक गौरवशाली इतिहास रहा है। संस्कृत, पाली व प्राकृत साहित्य में भीलों की चर्चा मिलती है। हल्दीघाटी के युद्ध में महाराणा प्रताप के साथ यह जनजाति योद्धा के रूप में रही, वहीं सन 1857 में निमाड़ का शेर टंटीया भील (जिसे लोग प्यार से मामा कहते हैं) ने अंग्रेजों से जमकर मुकाबला किया। बड़वानी जिले में भी खाज्या नायक, भीमा नायक जैसे क्रांतिकारी आदिवासी वीरों ने अपना जीवन आजादी की लड़ाई में लगा दिया।

भोगोलिक वितरण

भीलों को राजपूत लोग राजस्थान के प्राचीन मानते हैं। मध्यप्रदेश में भील जनजाति बाहुल्य है। भारत की 2011 की जनगणना के अनुसार भील भारत की कुल अनुसूचित जनजाति का 37.7 प्रतिशत यानि 4,618,068 की कुल जनसंख्या के साथ सबसे अधिक आबादी वाली भारत की अनुसूचित जनजाति है। इनका निवास मुख्यतः राजस्थान, गुजरात एवं मध्यप्रदेश के खरगोन, बड़वानी, झाबुआ, अलीराजपुर तथा धार जिले में हैं। अधिकतर लोग पहाड़ी क्षेत्र या वन के आसपास वाले क्षेत्र में निवास करते हैं।

शारीरिक विशेषताएँ

भील भूरे से गहरे रंग मध्यम कद सुगठित शरीर, बड़ी आँखें और चौड़े माथे एवं घुंघराले बाल वाले होते हैं। इनका जीवन कृषि आधारित होने के कारण ये कठोर परिश्रम करते हैं जिससे इनका शरीर मजबूत रहता है।

निवास

भीलों के अधिकतर दूर-दूर रहते । ये अपने-अपने खेतों पर घर बनाकर व एकांत में रहना अधिक पसंद करते हैं । कुछ लोगों के घर एक साथ रहते हैं जिसे 'फलिया' कहा जाता है । इनके घर अधिकतर सागवान की लकड़ी, बांस व घर की छत पर मिट्टी के खपरैल रखते हैं । वर्तमान में कुछ लोगों वर्तमान में पक्के मकान बनाकर रह रहे हैं ।

रहन-सहन

भील पुरुष धोती, हाफ पेंट और कमीज पहनते हैं और महिलाएं घाघरा, चोली तथा ओढ़नी पहनती हैं । वर्तमान में शिक्षित लोग अपने पहनावे में बदलाव ला रहे हैं । स्त्री-पुरुष अपने शरीर पर गुदवाना पसंद करते है। ये बाजरा, मक्का, ज्वार व दाल अधिक खाना पसंद करते हैं।

सामाजिक व्यवस्था

भीलों के गाँवो में अपने समाज की व्यवस्था होती है, प्रत्येक गाँव में अपने समाज का ग्राम प्रधान होता है जिसे पटेल कहते है । इनके अलावा ग्राम में ओझा जिसे बड़वा कहते वह गाँव के त्यौहार, पर्वो में पूजा करने का कार्य करता है एवं गाँव डायला व वारती रहता है ये लोग अपने गावं में प्रमुख माने जाते हैं । महिला-पुरुष में भेदभाव नहीं रखा जाता। इनमें सामूहिकता की भावना अधिक होती है । आज गाँवो में सामूहिक रूप से ये एक-दूसरे के कार्यों को पूरा कर देते है।

अर्थव्यवस्वस्था

भील जनजाति मुख्यत: कृषि पर आश्रित है । साथ में पशुपालन, वनोपज संग्रह, कृषि मजदूरी भी करते हैं । वर्तमान में कुछ लोग नौकरी एवं अन्य रोजगार भी करने लगे हैं । बकरी एवं मुर्गी पालन भी इनका पैसों का स्त्रोत हैं ।

धार्मिक जीवन

भील समाज प्रकृति-पूजक होता है, वह पहाड़, जंगल, जल व इनके गाँवो के देवता जिसमें रानी काजलमाता, घिन्चरी माता, बाबदेव, हिन्दला देव प्रमुख देवी-देवता की पूजा करता है। इनके अपने इन पर्वों, त्यौहारों के लोकगीत होते हैं।

बारेला जनजाति

बारेला भील से निकली जनजाति है इसकी बोली बारेली होती है जो की भीली भाषा से मिलती-जुलती है। बारेला समाज मुख्यतः खरगोन व बड़वानी जिले में निवास करता है। इनकी आर्थिक स्थिति भील समाज से थोड़ी सी संपन्न है।

निवास

बारेला समाज लोगों के घर एक साथ होते जिसे फलिया कहते। कुछ लोग अपने-अपने खेतों पर घर बनाकर एकांत में रहते हैं। इनके घर अधिकतर सागवान की लकड़ी, बांस व घर की छत पर मिट्टी के खपरैल रखते है। वर्तमान में कुछ लोग अपने पक्के मकान लिए हैं।

रहन-सहन

बारेला पुरुष धोती, पेंट, कमीज पहनते हैं और महिलाएं नाटी व साड़ी पहनती हैं। वर्तमान में इनके परिधानों में बदलाव आ रहा है। युवा जींस, टी शर्ट पहनने लगे हैं। ये गेंहू, मक्का, ज्वार व दाल खाते हैं। अपने खेतों में हरी सब्जियां भी उगाकर खाते हैं।

सामाजिक व्यवस्था

बारेला समाज के प्रत्येक गाँव की सामाजिक व्यवस्था होती है, इनके गाँव का ग्राम प्रधान होता है, जिसे पटेल कहते है । ग्राम में ओझा, जिसे बड़वा कहते है वह गाँव के त्यौहार, पर्वो एवं अन्य सांस्कृतिक रीति-रिवाजों में पूजा करता है। इनके में गाँव डायला व वारती भी रहता है यही गांवों में प्रमुख माने जाते है। बारेला समाज में सभी लोग आपस में मिलजुल कर रहते हैं, इनके समाज में महिलाओं की इज्जत की जाती है, लड़की-लड़के में भेदभाव नहीं किया जाता इसलिए समाज में भ्रूण हत्या नहीं होती है।

अर्थव्यवस्वस्था

बारेला जनजाति मुख्यत: कृषि पर आश्रित है। साथ में पशुपालन, कृषि मजदूरी भी करते हैं । कुछ शिक्षित होकर नौकरी भी कर रहे हैं । कुछ समय पहले बारेला समाज की आर्थिक स्थिति काफी कमजोर थी किन्तु अभी इनकी स्थिति में धीरे-धीरे सुधार आ रहा है।

धार्मिक जीवन

बारेला समाज प्रकृति-पूजक होता है, वह पहाड़, जंगल, जल, व इनके गाँवो के देवता जिसमें रानी काजलमाता, घिन्चरी माता, बाबदेव, हिन्दाला देव प्रमुख देवी-देवता की पूजा करता है । नवाय, होली, दीपावली, दीवासा इनके प्रमुख त्यौहार है। इन सभी त्यौहारों के अलग-अलग लोकगीत बने हुए है।

भिलाला जनजाति

भिलाला भी भील से ही निकली जनजाति है। कुछ लोग स्वयं को गुजरात के मूलनिवासी मानते हैं। भिलालों और बारेला के लोगों में कोई विशेष बदलाव नहीं दिखाई देता है । इनका निवास अलीराजपुर, बड़वानी, धार, खंडवा, देवास व खरगोन जिलों में हैं। इनकी भाषा भिलाली होती है, कुछ लोग निमाड़ी बोलते हैं ।

निवास

भिलाला समाज लोग बारेला समाज के समान एक साथ रहते हैं जिसे फलिया कहते। इनके घर अधिकतर सागवान की लकड़ी, बांस व घर की छत पर मिट्टी के खपरैल रखते है। वर्तमान में कुछ लोग पक्के मकान लिए हैं।

रहन-सहन

भिलाला पुरुष धोती और पेंट, शर्ट पहनते है और महिलाएं नाटी, घाघरा व साड़ी पहनती हैं। ये गेंहू, मक्का, ज्वार व दाल खाते हैं। अपने खेतों में हरी सब्जियां भी उगाकर खाते हैं।

सामाजिक व्यवस्था

भिलाला समाज की भी बारेला एवं भीलों की भांति सामाजिक व्यवस्था होती है, इनके भी प्रत्येक गाँव में अपने समाज का ग्राम प्रधान जिसे पटेल कहते है। ग्राम में ओझा जिसे बड़वा कहते वह गाँव के त्योहार, पर्वो में पूजा करने का कार्य करता है। इसके अलावा गाँव डायला व वारती रहता है यही गांवों में प्रमुखलोग माने जाते हैं।

अर्थव्यवस्वस्था

भिलाला जनजाति मुख्यत: कृषि पर आश्रित है। साथ में पशुपालन, कृषि मजदूरी भी करते हैं। कुछ शिक्षित होकर नौकरी भी कर रहे हैं।

धार्मिक जीवन

भिलाला समाज प्रकृति-पूजक होता है, वह पहाड़, जंगल, जल, व इनके गाँवो के देवता जिसमें रानी काजलमाता, घिन्चरी माता, बाबदेव, हिन्दाला देव प्रमुख देवी-देवता हैं। दीवाली, होली, इनके प्रमुख त्योहार हैं। ये पाटला की पूजा करते हैं। यह दिन इनके के लिए विशेष होता हैं। बारेला समाज के लोग दीपावली के दिन रात को नाचते हैं तो भिलाला समाज के लोग दिन में नाचते हैं।

भील, भिलाला एवं बारेला समाज की अन्य प्रमुख विशेषताएं

स्पष्टवादी - ये लोग स्वभाव से ही बहुत स्पष्टवादी हैं, जो कुछ महसूस करते हैं उसे बिना झिझक कहते हैं।

सरलता - जो कहते हैं वही करते हैं अर्थात् इनकी कथनी एवं करनी में कोई कोई अंतर नहीं होता। किसी भी मसले पर ये लोग आपस में सहमती के आधार पर ही फैसला लेते हैं। सादगी जीवन इन्हें पसंद हैं, प्रकृति के साथ मिल-जुल कर रहना ही इन लोग की मुख्य विशेषता हैं।

आत्म-सम्मान - आत्म-सम्मान कि रक्षा के लिए ये लोग अपनी संपत्ति तथा जीवन भी न्यौछावर कर देते हैं। इस लिए आज भी इनके समाज में स्त्रियों को विशेष मान-सम्मान दिया जाता हैं।

सामुदायिक जीवन - सामुदायिक जीवन इन लोगों कि मुख्य विशेषता हैं, सुख हो या दुःख किसी भी अवसर पर समाज आपस में सहयोग करा हैं।

साहस - इन लोगों में शुरू से ही साहस भरा हुआ हैं। ये कठिनाई के समय में भी साहस का परिचय देते हुए उस समस्या का निदान करने का प्रयास करते हैं।

अतिथि सत्कार - ये नि:स्वार्थ भाव से अपने मेहमानों का का आदर-सत्कार करते हैं। यदि कोई पड़ोसी के घर मेहमान आता हो तो उसे भी अपना ही मेहमान समझते हैं।

शांतिप्रिय- इनका स्वभाव शांत होता है।

सत्यवादिता - ये लोग ईमानदारी से अपना जीवन जीते हैं इनमें किसी प्रकार झूठ का सहारा लेकर स्वार्थ के लिए काम नहीं किया जाता।

निष्कर्ष

इस अध्याय के बाद कुछ बिंदू निष्कर्ष के रूप में निकल कर आते हैं।

- *मध्यप्रदेश बहुल जनजातियों वाला राज्य है जिनमें से सबसे अधिक भील जनजाति है जो अनुसूचित जनजाति का 37.7 प्रतिशत यानि 4,618,068 की कुल जनसंख्या हैं।*

- *मध्यप्रदेश में मुख्यत: निमाड़ी, मालवी, बुन्देली, बघेली एवं भीली बोलियाँ बोली जाती है ।*

- *बारेला, भिलाला भील से ही निकली हुई जनजातियाँ है जो अभी भीलों से संपन्न स्थिति में अपना जीवन यापन कर रही है।*

- *बारेला, भीलों एवं भिलालों के जीवन में लोकगीतों का अत्यधिक महत्व हैं। इनके लोकगीत इनकी संस्कृति एवं प्रकृति से अधिक जुड़े हुए हैं।*

उपसंहार

मेरे लघु-शोध प्रबंध कार्य में मैंने मध्यप्रदेश के बड़वानी जिले के देवली, सोलवन, साकड़, खुरमाबाद एवं शिवन्या गाँव का भ्रमण किया । इस भ्रमण के दौरान मैंने 72 आदिवासी लोक गायक/गायिकाओं से बारेली बोली के लोकगीतों का संकलन किया। फिर मैंने इन लोकगीतों का हिंदी में अनुवाद किया व साथ में इन गीतों का आदिवासियों के जीवन में क्या महत्त्व है? इस बात को दिखने का प्रयास किया । इसके आलावा मैंने 10 लोक गायक/गायिकाओं का साक्षात्कार भी लिया । इन सभी लोगों से मुझे बहुत सी महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त हुई। इस बात को कहने में मुझे कोई झिझक नहीं हो रही है कि आज तक इन आदिवासी लोक गायकों एवं गायिकाओं का किसी ने न कभी साक्षात्कार लिया न ही इनके गीतों का संकलन किया। इन सभी लोगों के पास भरपूर ज्ञान भरा है जो पूर्ण रूप से मौखिक ही है , जिसे आज लिखित कर बचाने की जरुरत है तभी इनकी आने वाली पीढ़ी अपनी संस्कृति, ज्ञान, अपनी अस्मिता को बचा सकती है । लोकगीतों के माध्यम से मुख्यधारा के लोग आदिवासी समाज की वास्तविकता को जान सकते है।

1. ***आदिवासी समाज के लिए लोकगीत का बहुत ही महत्त्व हैउनके जीवन में लोकगीत , एवं संगीत जीवन भर साथ रहता है इनको लोकगीतों से मनोरंजन के साथ अपने समाज की संस्कृति ,अपने रीतिरिवाज ,त्योहारपर्व के अस्तित्व को बचाने का ज्ञान , भी मिलता है।***

2. *इनके लोकगीत इनके जीवन में उत्साह भर देते हैं। जब थाली व ढोल की ताल बजने लगता हो तो इनके पैर थिरकने लगते है व स्वत: ही इनके मुख से लोकगीत निकलने लगते हैं।*
3. *कुछ समय पहले इनके लोकगीतों द्वारा बीमार लोग तक सुधर जाते थे। आज भी लोकगीतों को गाकर लोक तनाव मुक्त हो जाते हैं।*
4. *खेतों में निंदाई, बुवाई करते समय गीत गाने से इन्हें थकान नहीं होती जिससे कठिन से कठिन कार्य को भी ये आसानी से कर लेते हैं।*
5. *आदिवासी लोकगीतों में आधुनिकरण का प्रभाव दिखाई देने लगा है। आज के लोकगीतों में उपभोगवादी वस्तुएं आ गई हैं।*
6. *कुछ आदिवासी संगठन पिछले ,सालों से आदिवासी को अंपने अधिकारों* **20-15** *तथा आदिवासी समाज पर हो र ,संस्कृति को बचाने ,आत्मसम्मान ,स्वाभिमानहे अत्याचार लाफ आवाज उठानेशोषण के खि ,दमन ,अन्याय ,के लिए लोगों को जागरूक कर रहे हैं। लोगों में लोकगीतोंजनगीतों के माध्यम से चेतना लाने का कार्य , किया जा रहा है।*
7. *वर्तमान में आदिवासियों के विवाह के लोकगीतों की जगह केसिओ ने तो ढोल, मांदल व थाली की जगह बैंड बाजा आ चुका है जिससे पहले की तरह लोकगीत व नाचने के तरीके में कमी आ रही है।*
8. *शिक्षित आदिवासी युवाओं के हाथों में मोबाइल आने के कारण उनका का रुझान लोकगीत से हटकर फ़िल्मी गीतों की और अधिक जा रहा है।*